Class- VIII (हिन्दी) Sub : वसंत	पाठ- 11 जब सिनेमा ने बोलना सीखा दिनांक- 28/10/2021

लेखक- प्रदीप तिवारी

शब्दार्थ- (छात्र केवल पढ़ेंगे व याद करेंगे)

सजीव= जीवित । मुर्दा= मरा हुआ । सवाक्= बोलने वाला ।
दौर= युग । पटकथा= फिल्म की कहानी। वक़्त= समय।
निर्माता= निर्माण। संवाद= बातचीत। महज़= केवल।
इंटरव्यू= साक्षात्कार। मूक= न बोलने वाला। साउण्ड= आवाज़।
संगीतकार= संगीत बनाने वाला। स्टार= सितारा। अनोखे= अनूठे।
गीतकार= गीत लिखने वाला। किरदार= पात्र। चर्चित= प्रसिद्ध।
निर्देशक= निर्देश देने वाला। विनम्र= सरल। खिताब= पुरस्कार।
पौराणिक= पुराण पर आधारित। अभिनय= नाटक करना। कद्र= सम्मान, परवाह।
देह= शरीर। दैनिक= प्रतिदिन। स्टाइल= अंदाज़।
सज्जा= सजाना। आरंभिक= शुरुआती। शिखर= चोटी, ऊँचाई।
पार्श्वगायन= परदे के पीछे से गाना। पारिश्रमिक= श्रम के बदले मिला धन।
कृत्रिम= बनावटी, नकली। प्रतिबिंब= छाया। सार्वजनिक= सारी जनता का।
डिस्कफार्म= तवा या सी. डी. के रूप में।

निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए (छात्र स्वयं हल करने का प्रयास करेंगे

1. पहली बोलती फ़िल्म के निर्माता कौन थे ?
   क) दादा साहब फाल्के ग) अर्देशिर एम. ईरानी
   ख) आलम आरा घ) राजकपूर
2. 'शो बोट' क्या थी ?
   क) एक बोलती फ़िल्म ग) हॉलीवुड की फ़िल्म
   ख) अर्देशिर द्वारा देखी फ़िल्म घ) ये सभी
3. आरंभ में सवाक् फ़िल्म बनाने के लिए कौन नहीं था ?
   क) गीतकार ग) संगीतकार
   ख) संवाद लेखक घ) उपर्युक्त सभी
4. पहली सवाक् फ़िल्म का क्या नाम था ?
   क) अरेबियन नाइट्स ग) आलम आरा
   ख) शो बोट घ) माधुरी
5. किसकी आवश्यकता न होने के कारण मूक फ़िल्मों को दिन के प्रकाश में शूट किया जाता था ?
   क) साउण्ड ग) डिस्क फॉर्म

ख) कैमरा　　घ) संगीत

6. इनमें से कौन नायक और स्टंटमैन दोनों था ?

क) याक़ूब　　ग) सोहराब मोदी

ख) विट्ठल　　घ) महबूब

7. औरतों में सुलोचना की कौन-सी चीज़ लोकप्रिय थी ?

क) पहनावा　　ग) सुंदरता

ख) अभिनय　　घ) हेयर स्टाइल

8. सवाक् सिनेमा को किसकी तीखी दृष्टि का सामना पड़ा ?

क) ब्रिटिश प्रशासकों का　　ग) जर्मन प्रशासकों

ख) भारतीय प्रशासकों का　　घ) इनमें से कोई नहीं

9. 'आलम आरा' कब प्रदर्शित की गई ?

क) 10 फरवरी 1931　　ग) 10 मार्च 1931

ख) 16 मार्च 1931　　घ) 14 मार्च 1931

10. इनमें से किस फ़िल्म का विषय सामाजिक था ?

क) आलम आरा　　ग) माधुरी

ख) अरेबियन नाइट्स　　घ) खुदा की शान

विशेष- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी अभ्यास-पुस्तिका में स्वच्छ व सुंदर लिखावट में लिखें-

1) विट्ठल का चयन 'आलम आरा' के नायक के रूप में हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया ? विठ्ठल ने पुनः नायक होने के लिए क्या किया ?

उत्तर- 'आलम आरा' फिल्म के नायक के रूप में विठ्ठल का चयन हुआ था । वे उस समय सबसे अधिक पारिश्रमिक लेने वाले कलाकार थे। फिर भी उन्हें फ़िल्म से निकाल दिया गया क्योंकि उन्हें उर्दू बोलनी नहीं आती थी जिसके कारण वे संवादों को ठीक से बोल नहीं पाते थे ।

विट्ठल ने इसे अपना अपमान समझा। उन्होंने अपना हक़ पाने के लिए मुकदमा दायर कर दिया । उनका मुकदमा उस समय के सबसे मशहूर वकील मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा । इस मुकदमे में विठ्ठल की जीत हुई और वे भारत की पहली सवाक् फ़िल्म के नायक बन गए ।

2) पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निर्देशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था ? अर्देशिर ने क्या कहा ? और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है ?

उत्तर- पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निर्देशक अर्देशिर को 1956 में सम्मानित किया गया । सम्मान करने वालों ने उन्हें 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' कहा ।

अर्देशिर ने इस मौके पर कहा- "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की ज़रूरत नहीं है । मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का ज़रुरी योगदान दिया है।"

इस प्रसंग में लेखक की टिप्पणी यह थी कि निर्माता-निर्देशक अर्देशिर बहुत अधिक विनम्र थे । वे सवाक् फ़िल्मों की उपलब्धि का श्रेय अपने ऊपर नहीं लेना चाहते थे ।

3) डब फिल्में किसे कहते हैं ? कभी-कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है । इसका कारण क्या हो सकता है ?

उत्तर- डब फिल्में वे फिल्में होती हैं जिन्हें किसी एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित किया जाता है। आजकल इस प्रकार की फिल्मों को बहुत पसंद किया जा रहा है। कभी-कभी फिल्मों में अभिनेता का मुख पहले ही खुल जाता है, लेकिन आवाज़ कुछ देर बाद आती है। इसका मुख्य कारण तकनीकी में पूर्ण दक्षता का अभाव है। कार्यशैली में पूर्णता का अभाव होने के कारण यह त्रुटि देखने को मिलती है । कभी-कभी भारी-भरकम शब्दों और उनके अर्थों में जटिलता होने के कारण भी आवाज़ और मुँह खोलने में अंतर आ जाता है।

4) फिल्में समाज का रूप होती हैं । क्या वास्तव में फिल्में मानव-समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर रही हैं या ये केवल मनोरंजन का साधन मात्र हैं ?

उत्तर- वर्तमान युग मे फिल्मों में काम करना, उन्हें देखना तथा उन्हीं के अनुरूप क्रियाकलाप करना मानव-समाज में एक फैशन बन गया है । फिल्में समाज को चित्रित करती हैं; समाज में हो रहे अच्छे-बुरे को दर्शाती है; इन्हीं के अनुरूप व्यक्ति समाज में अपना दृष्टिकोण बनाता है। ये व्यक्ति के मनोरंजन तथा ज्ञान का विकास करती है। किन्तु यह भी कड़वा सच है कि आज फिल्मों से समाज में भटकाव का मार्ग खुल गया है। आज बहुत सारी फिल्में मात्र मनोरंजन तथा धन कमाने हेतु ही बन रही है। उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं कि समाज किस दिशा में जा रहा है। अतः मूल्यबोध की दृष्टि से देखा जाय तो फिल्में समाज का उत्थान करने वाली होनी चाहिए । लेकिन वर्तमान समय में अधिकांश फिल्में मनोरंजन का साधन मात्र है।

नोट- यह पाठ्य-सामग्री घर में ही रहकर तैयार की गई है।

0000000000000000000000000